eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार और श्रमण परम्परा

प्रोफेसर (डॉ0) साधना चतुर्वेदी[1], निरूपमा सिंह[2]
[1]राजनीति विज्ञान विभाग, एन0ए0एस0 कॉलिज, मेरठ।
[2]असि0 प्रोफे0 राजनीति विज्ञान, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय म0 स्ना0 महाविद्यालय, माधवपुरम, (मेरठ)

Received: 20 September 2025 Accepted & Reviewed: 25 September 2025, Published: 30 September 2025

Abstract

श्रमण परम्परा भारत की अति प्राचीन परम्परा मानी गयी है, यह परम्परा मानववादी, स्वतन्त्रता, समतावादी, अहिंसावादी, अनिश्वरवादी, कर्मवादी, नैतिकता, सद्चरित्रता व जियो और जीने दो में विश्वास करने वाली रही है। यह शोध पत्र गरिमापूर्ण जीवन के संवैधानिक अधिकार के मूल को श्रमण परम्परा में खोजने का प्रयत्न है। श्रमण परम्परा और गरिमापूर्ण जीवन के अधिकार के मध्य एक सम्बन्ध अवश्य ही दिखाई पड़ता है। इसी सम्बन्ध के विषय में यह शोध पत्र व्याख्या करता है।

प्रमुख शब्द – श्रमण परम्परा, गरिमापूर्ण जीवन, समता, संस्कृति, श्रमण, समन, शमन

Introduction

भारत देश की संस्कृति वर्तमान समय में भी सहिष्णुता, सद्भाव तथा प्रेम के लिए विश्व में पहचान रखती है। भारतीय संस्कृति को ''गंगा–जमुनी'' संस्कृति के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, जिसका अर्थ है भिन्न–भिन्न संस्कृति का सम्मिलित स्वरूप। भारत की इस पहचान के पीछे यहाँ की सभी संस्कृतियों का योगदान है परन्तु यह ''सहिष्णुता समता तथा सद्भाव'' के पीछे मुख्य रूप से श्रमण संस्कृति अथवा परम्परा के सिद्धान्तों को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। श्रमण परम्परा से निकले हुए भारत के दर्शन है– बौद्ध, जैन, आजीवक, चार्वाक। ये सभी अलग–अलग दर्शन है परन्तु सभी श्रमण परम्परा को ही आगे बढ़ाते रहे हैं। ये सभी व्यक्ति की स्वतन्त्रता, समता में विश्वास करते हैं। गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता, समता, भ्रातृत्व पर आधारित है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि सभी मनुष्य स्वयं के लिए प्रेम और सम्मान प्राप्त करने की प्रबल आन्तरिक इच्छा रखते हैं। यही भाव व्यक्ति को प्रसन्नचित्ता तथा सुरक्षा का भाव देते हैं। व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करते हैं। व्यक्ति के जीवन को गरिमा प्रदान करते हैं या जीवन को गरिमापूर्ण बनाते हैं। गरिमा मानव के जीवन की वह स्थिति है, जिसमें बिना किसी भेदभाव के एक व्यक्ति को मानव रूप में जन्म लेने मात्र से ही अर्थात् एक मानव होने के नाते उसे वह सभी बुनियादी सुविधाऐं सम्मान प्राप्त हो जो उसके जीवन के बनाये रखने तथा जीवन स्तर को उन्नति करने में उसे सहायता प्रदान करें। गरिमा शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण डिग्निटी (Dignity) है, जो लैटिन शब्द डिग्टिास व डिंगस से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ सम्मान और आदर की योग्यता है।[1]

गरिमा एक इन्द्रधनुषी शब्द है, जिसके अनेक आयाम है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुसार गरिमा शब्द का अर्थ समझता है। अतः गरिमा को परिभाषित करना एक बहुत कठिन कार्य है परन्तु गरिमा शब्द के साथ प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष सम्बन्ध जरूर समझता है। यह केवल सम्मान और केवल सुविधाओं की प्राप्ति की स्थिति नहीं है बल्कि इससे कुछ बढ़ कर के है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

भारतीय संविधान में गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार : भारतीय संविधान के भाग 3 मौलिक अधिकार के अनुच्छेद 21 में उल्लेखित प्राण व दैहिक स्वतन्त्रता के मूल अधिकार के विस्तार स्वरूप गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार वर्तमान में एक मूल अधिकार के रूप में शामिल किया गया है। जो कि भारतीय नागरिको सहित गैर नागरिकों को भी प्राप्त है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भी ''व्यक्ति की गरिमा'' उल्लेखित है। गरीमापूर्ण जीवन अधिकार के अनुसार मनुष्य की सांसे चलना ही जीवन नहीं होता है। गरिमा के साथ जीवन जीना भी इस अधिकार के साथ सम्मिलित होता है। फ्रांसिस कॉलोनी बनाम दिल्ली मामले में माना गया कि केवल पशुवत सांसों का चलना ही जीवन नहीं है तथा उच्चतम न्यायालय ने कहा–''सवाल उठता है कि क्या जीने का अधिकार केवल शरीर के अंगो या उसकी मानसिक क्षमता के संरक्षण'' तक ही सीमित है या यह इससे ज्यादा है और इसमें और भी कुछ आता है। हम समझते है कि जीवन के अधिकार में मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार और जुड़ी जारी बातें अर्थात् समुचित पोषण, कपड़ा, आश्रय, पढ़ने–लिखने और स्वयं को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करने, स्वतन्त्रतापूर्वक आने–जाने और साथी मनुष्यों के साथ मिलने–जुलने की सुविधाऐं जैसी जीवन की बुनियादी आवश्यकताऐं शामिल हैं।''[2]

किसी के प्रति हिंसा न करना, कार्य करते हुए अन्य लोगों के कल्याण का ध्यान रखना, जैसा स्वयं के लिए चाहते है वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करना गरिमामय जीवन की बुनियादी बाते हैं। इसी प्रकार उचित रूप से व्यक्ति को जीवन जीने के संसाधन व व्यवहार परस्पर प्राप्त होना ही गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार है, जिसमें सम्मान व स्वतन्त्रता, स्वास्थ्य सुविधाऐ, सुरक्षा, शिक्षा, आजीवीका, सामाजिक सुरक्षा, समतापूर्ण व भेदभाव रहित व्यवहार स्वस्थ वातावरण सम्मिलित होते हैं।

श्रमण परम्परा का परिचय : ''श्रमण परम्परा के विषय में ऋग्वेद के केशीसूक्त, अथर्ववेद, ताण्ड्य ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण, ऐतरेय, तैत्तिरीय, आरण्यक, वृहदारण्यकोपनिषद्, नारद संहिता, पंचविश ब्राह्मण, बौधायन धर्मसूत्र, याज्ञवलय स्मृति, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत तथा जैन व बौद्ध साहित्य से जानकारियाँ प्राप्त होती है।''[3]

सिन्धुघाटी सभ्यता से प्राप्त मूर्तियों के साक्ष्यों से भी इतिहासकार श्रमण परम्परा का सम्बन्ध मानते हैं। इस प्रकार यह भारत की बहुत प्राचीन परम्परा है, जो कि अवैदिक तथा अनिश्वरवादी थी। श्रमण परम्परा मुख्यतः समता पर आधारित परम्परा है, जिसके मूल सिद्धांत श्रमण, समन व शमन हैं। ये तीनों शब्द प्राकृत भाषा के 'समन' से बने हैं।

श्रमण का अर्थ है, जो अपने परिश्रम से अपना कल्याण करें अर्थात् व्यक्ति अपना विकास स्वयं के ही परिश्रम से कर सकता है। अपने दुःख–सुख, उन्नति–अवनति के लिए वह स्वयं ही जिम्मेदार होता है। व्यक्ति स्वयं के कर्मोनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करता है।

समन का अर्थ है समता, सभी को समान भाव से देखना, अपने पराये के भेद से मुक्त होना। यह पाली भाषा का शब्द है। प्रवचनसार में समन की व्याख्या इस प्रकार की गई है–

''समसन्तु बन्ध वग्गो सम सुहदुक्खो पसंसणिदसमो।
समलोट्टुकचणो पुण जी विद मरणे समो समणो।।

अर्थात् शत्रु और बन्धु, सुख और दुःख, प्रशंसा और निन्दा, मिट्टी और सोना, जीवन और मरण में समन सम बुद्धि होता है।''[4]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

समता मानव का एक अति कोमल व्यवहार होता है, जबकि विषमता और भेदभाव मानव का क्रूरतापूर्ण व्यवहार होता है। आचरण में समतापूर्ण व्यवहार ही अहिंसा है। विचारों की समता अनेकान्त और समाज में समतापूर्ण व्यवहार अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकता से अधिक कुछ भी जमा न करना और भाषा की समता स्याद्वाद कहलाती है। इस प्रकार श्रमण परम्परा में सभी के प्रति और सभी परिस्थितियों में समता का भाव रख जाता है।

शमन का अर्थ है, जो अपनी इच्छाओं को शान्त रखे अपनी बुरी प्रवृत्तियों, व्यवहार इत्यादि का नाश करें, दमन करें। 'शमन' परासियों द्वारा श्रमण को दिया गया शब्द है, जिसका उल्लेख अलबरूनी की यात्रा विवरण में मिलता है।''[5] शमन वो है जो मन, वचन, कार्य पर नियंत्रण रखता है और सद्कार्यों को करता है।

यह अवैदिक परम्परा है, जिसने वेदों को अन्तिम सत्य नहीं माना। अतः इन्हें नास्तिकवादी भी कहा जाता है परन्तु यह वर्गीकरण उचित प्रतीत नहीं होता है क्योंकि ''जैन जो कि श्रमण परम्परा का दर्शन है, वह आत्मा और पुनर्जन्म को मानता है जबकि सांख्य दर्शन आस्तिक दर्शन है जो वैदिक परम्परा का भाग है, वह ईश्वर को नहीं मानता है।''[6]

वेदों में ईश्वर को सृष्टि का निर्माता और संचालक माना जाता है, जिसको प्रसन्न करने के लिए यज्ञ व बलि दी जाती थी। वैदिक परम्परा जन्म लिंग व वर्ण के आधार पर उच्च–निम्न सामाजिक पदमोपानुसार व्यक्ति के प्रति व्यवहार करने के नियमों का पालन करती है। जिसमें ईश्वर को प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति का कारण माना जाता हैं इसके विपरीत श्रमण परम्परा में व्यक्ति के कर्मों को ही उसके जीवन परिस्थितियों का कारण माना जाता है, जिसे व्यक्ति अपने किए कार्यों से उच्च या निम्न स्थिति प्राप्त कर सकता है। श्रमण परम्परा में प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों द्वारा उन्नति व समृद्धि प्राप्त करने का अधिकारी माना जाता है। इसमें जन्म, जाति, वर्ण, लिंग या अन्य किसी भी प्रकार से भेदभावपूर्ण व्यवहार का निषेध किया गया है। श्रमण परम्परा में न केवल मानव जगत बल्कि पत्येक प्राणी जगत को समान भाव से देखा जाता है। प्रत्येक को स्वयं के समान माना जाता है। अतः श्रमण परम्परा में सभी को उन्नति करने के समान अवसर देने, मानव व अन्य प्राणी जगत, वनस्पति संरक्षण हेतु भी पंचशील सिद्धांतों के अनुसार जीवनयापन करने का दर्शन दिया गया, जिसके अनुसार सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा किसी भी क्षेत्र में सभी को समतापूर्ण अवसर, गरिमापूर्ण जीवन प्रापत होता है। ये पंचशील या पंचमहाव्रत हैं–

अहिंसा : श्रमण परम्परा में अहिंसा का बहुत विस्तृत अर्थ अपनाया गया है, केवल जीव हत्या न करना ही अहिंसा नहीं है बल्कि विचार, भाषा, भाव, व्यवहार अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा से किसी को भी दुःख न देना, अहिंसा है। इस प्रकार यह 'जियो और जीने दो' के सिद्धान्त का पालन करता है।

अपरिग्रह : अर्थात् आवश्यकता से अधिक जीवन जीने के साधनों को संग्रह न करना। महात्मा गांधी भी श्रमण परम्परा की इस बात से अपने जीवन में उपयोग करते थे और उन्होंने कहा भी था कि प्रकृति सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति तो कर सकती है परन्तु लालच की नहीं। अपरिग्रह साधनों के समुचित नियोजन का जीवन सिद्धान्त है, जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार संसाधनों का उपयोग करें ओर शेष समाज के अन्य सदस्यों के लिए छोड़े। किसी विशेष के नियन्त्रण को अपरिग्रह रोकता है। आधुनिक समय की बात करें तो सामाजिक न्याय की मांग की पूर्ति अपरिग्रह के आचरण की जा सकती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

सत्य का पालन करना : अर्थात् जो जैसा इंद्रियों द्वारा देखा और महसूस किया गया है, उसे ही बोलना। झूठ अथवा असत्य से मानव जीवन की अनेक समस्या उत्पन्न होती है। जिसके कारण समस्त सृष्टि को भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, लालफीताशाही जैसी अनेक समस्याओं के पीछे की एक बड़ी वजह सत्य का पालन नहीं करना भी है। आज के समय में इस प्रकार की समस्या व्यष्टि और समृष्टि को दुष्प्रभावित बहुत बड़े स्तर पर कर रही है। जापान जैसे देशों में पंचशील के अनुसार व्यवहार कर जापानी सरकार व नागरिक अपने देश को समृद्ध और विकसित बना रहे हैं।

अस्तेय : अर्थात् चोरी न करना जिसका विस्तृत अर्थ है कि ''मन वचन, तन से किसी भी व्यक्ति के सामान को बिना उसकी अनुमति के ग्रहण न करना, न ऐसी इच्छा रखना। जब अस्तेय की भावना को मानव समाज अपने व्यवहार का अभिन्न अंग बना कर कार्य करेगा तो समता, स्वतन्त्रता, भ्रातत्व के भाव स्वतः स्फूटित होंगे। इससे एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।

ब्रह्मचर्य : अर्थात् मन, वचन, शरीर से अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना। अपने समस्त मनोविकारों और वासनाओं दूर करना। केवल विपरीत लिंग से दूरी बनाने को ही श्रमण परम्परा ब्रह्मचर्य नहीं कहा गया है बल्कि मानसिक, शारीरिक, वाचिक रूप से स्वयं को नियन्त्रित कर संयमित करना ही ब्रह्मचर्य है।

इस प्रकार ये पंचशील/पंचमहाव्रत मनुष्य के जीवन को सभी प्रकार से संयमित करते हैं और सभी को स्वतन्त्रता व समता पूर्ण जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर मानव जीवन में मानवीयता अर्थात् गरिमा को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

श्रमण परम्परा के विद्वान मुनि कहे जाते हैं। ये अपने आध्यात्मिक ज्ञान के शिखर पर रहते हुए भी मानव समाज की समस्याओं के समाधान समय–समय पर इनके मध्य में जाकर करते थे, इस प्रकार श्रमण परम्परा में केवल सैद्धांन्तिक आधार पर ही नहीं बल्कि व्यवहारिक आधार पर भी एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका में रहे। मुनियों द्वारा दिखाये मार्ग पर चलने से भारतीय संस्कृति व समाज की चहुमुखी उन्नति हुई। भारत को प्राचीन काल में सोने की चिड़या कहने के पीछे, यही उन्नति थी, जिसके पीछे श्रमण परम्परा के विचार व कार्य एक बहुत बड़ा कारण रहे।

आध्यात्मिक ज्ञान की उन्नति भारत को विश्व में गुरु का स्थान देती है, जिसकी चर्चा आज वर्तमान समय में लगातार होती रहती है। श्रमण परम्परा द्वारा भारतीय संस्कृति को प्रेम, समन्वय, सहिष्णुता युक्त बनाने में महती निभाई और इन्हीं बुनियादी विशेषताओं के कारण ही भारत में कोई भी व्यक्ति अपने प्रयास व कर्मों के आधार पर अपने जीवन की दशा व दिशा बदल सकता था और अपने साथ समाज को भी उन्नत बना सकता था।

गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार तथा श्रमण परम्परा के मध्य सम्बन्ध : गरिमापूर्ण जीवन के अधिकार में प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता, समता, अवसरों की उपलब्धता, आजीविका, सम्मान, प्रेम, बुनियादी सुविधाओं के सम्मानजनक उचित पूर्ति को सुनिश्चित किया जाता है। इसी प्रकार से श्रमण परम्परा में भी प्रत्येक व्यक्ति को समता के आधार पर अपने लिए उन्नतशील जीवन जीने का मार्ग चुनने का अवसर प्राप्त होता है। श्रमण परम्परा जाति व वर्ण व्यवस्था की विरोधी रही है, लिंगभेद में विश्वास नहीं करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को समान मानती है और कर्मवादी व्यवस्था अर्थात् प्रत्येक मानव अपने जीवन में उन्नति करने के समान अवसर प्राप्त करने का अधिकारी होता है, जन्म के आधार पर उसे अपनी उन्नति करने से किसी भी प्रकार

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

से वंचित नहीं किया जा सकता, उसके लिए कर्म ही उसके जीवन की दिशा व दशा बनाते और बिगाड़ते हैं। महिलाओं को श्रमण संस्कृति में विशेष स्थान दिया गया है तथा उन्हें भी वो सभी कुछ करने का अधिकार है जिस कार्यों को करने से कोई पुरूष अपना और अपने जीवन का विकास कर सकता है। श्रमण परम्परा और गरिमापूर्ण जीवन के अधिकार के मध्य निम्नवत् समानताऐं दृष्टिगत होती हैं–

1. मानवता को पोषण करना।
2. समता
3. स्वतन्त्रता
4. बन्धुता
5. पर्यावरण को संरक्षित करना।
6. सम्मानजनक व्यवहार सभी प्राणियों के प्रति।
7. लिंग भेद नहीं, समता आधारित व्यवहार।
8. निष्पक्ष वृद्धि करने हेतु अवसर की उपलब्धता।
9. जन्म, जाति, वर्ण, सम्पत्ति, स्थान इत्यादि विभेदकारक आधारों पर भेद नहीं।
10. अहिंसात्मक आधार पर समस्याओं का समाधान खोजना।

निष्कर्ष : गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार ऐसा अधिकार हे जो मनुष्य के अस्तित्व को श्रेष्ठ और मानवीयता से परिपूर्ण करने की परिस्थितियों की पूर्ति हेतु प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त है। गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार विश्व के अनेको देशों में संवैधानिक अधिकार के रूप में है, जैसे–स्विजरलैण्ड, जर्मनी, भारत इत्यादि। यह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अधिकार है। भारतीय संस्कृति की श्रमण परम्परा मानव की समता, स्वतन्त्रता, परस्पर प्रेमभाव के सिद्धान्त व व्यवहार पर खड़ी है। ये भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताऐं भी हैं, आधुनिक समय के सबसे ज्यादा चर्चित व मान्यता प्राप्त अधिकार गरिमा पूर्ण जीवन के अधिकार की जड़े श्रमण परम्परा से स्पष्टता से जुड़ी हुई दृष्टिगत होती है।

यह स्पष्ट रूप से निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार और श्रमण परम्परा के मध्य एक आन्तरिक सम्बन्ध है। ये दोनों ही मानव के उत्थान के लिए प्रयास करती है।

संदर्भ सूची

1. रीना रशल, समाज कार्य के मूल्य के रूप में गरिमा और सम्मान, (https://www.egyancash.ac.in), दिनांक 03.05.2022

2. काश्यप, सुभाष (अनुवादक, ध्रुवनाथ चतुर्वेदी), भारतीय संविधान और आम आदमी, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ0सं0–150

3. श्रमण संस्कृति, https//www.academia.edu दिनांक 10.09.2025

4. कुमार, कला (सम्पादक), श्रमण संस्कृति : सिद्धानत और साधना, एक तुलनात्मक अध्ययन, सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा, 1979, पृ0सं0–20

5- कौन सी परम्परा है सबसे पुरानी श्रमण परम्परा या वैदिक परम्परा? श्रमण संस्कृति का इतिहास, "Hamara Atteet, Bundelkhand M Education", www.youtube.com दिनांक 02.09.2025 "Sramana Movement (EC)", www.youtube.com दिनांक 06.09